हो जाती हैं एवं माह नवम्बर में नये पौधो को मातृ वृक्ष से अलग कर पॉलीथीन थैलों में प्रत्यारोपित करना चाहिए।

एफ0आर0आई, देहरादून द्वारा विकसित वायर तकनीक द्वारा गूटी पौध तैयार करना

एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा गूटी बॉधने की नई उन्नत तकनीक जिसे वायर तकनीक कहा जाता है, विकसित की गयी है। इस विधि द्वारा छाल गोलाई से नहीं निकाली जाती है बल्कि प्लास्टिक कोटेड तार (2 एम0एम0 व्यास) से लीडिंग शूट के चारों तरफ टाईट करते हैं, जिससे हल्का व स्पष्ट घाव बन जाय। इसके उपरांत आई0बी0ए0 5000 पी0पी0एम0 से उपचारित कर मौस से ढककर काली पालीथीन से दोनो तरफ बॉध देते हैं।

समयवद्ध कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य	वर्ष	माह
1.	स्वस्थ बीज वृक्षों का चयन	–	कभी भी
2.	बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	मई (द्वितीय पक्ष)
3.	बीज बुआई	प्रथम वर्ष	मई (अंतिम सप्ताह)/ जून (प्रथम सप्ताह)
4.	प्रत्यारोपण	प्रथम वर्ष	अगस्त
5.	पौध रखरखाव	द्वितीय वर्ष	वर्ष भर
6.	वृक्षारोपण कार्य	तृतीय वर्ष	जुलाई–अगस्त

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी
मो0 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी
मो0 9411107617, 05946–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, नैनीताल
मो 09411102358, 05942–236270

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, रामपुर रोड़, हल्द्वानी-263139

D.K. Press, HLD # 9719915597, 05946-225208

काफल

(Myrica esculenta)

पौध प्रवर्धन प्राविधि

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

काफल

(Myrica esculenta)

परिचय

काफल एक सदाबहार वृक्ष है। यह एक लिंगी होता है अर्थात इसके नर व मादा वृक्ष अलग–अलग होते हैं। यह नेपाल तथा उत्तरी भारत के मध्य हिमालयी क्षेत्र का महत्वपूर्ण फलदार वृक्ष है जो 1300 से 2100 मीटर ऊँचाई तक पाया जाता है। इसका फल बहुत स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है। फूल अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य आता है तथा फल अप्रैल से मध्य जून तक प्राप्त होता है। इसका उपयोगी भाग छाल व फल है। छाल का प्रयोग विभिन्न आयुर्वेदिक दवाओं तथा फल का उपयोग शरबत, जूस व चटनी बनाने में होता है। मादा काफल वृक्ष से लगभग 18 वर्ष के उपरान्त फल प्राप्त होने लगता है।

पौध प्रवर्धन विधि

पौध प्रवर्धन कार्य बीज, गूटी एवं कटिंग द्वारा किया जा सकता है। बीज द्वारा वृहद स्तर पर पौध उत्पादन कार्य सरलता से किया जा सकता है। गूटी द्वारा लगभग 60 प्रतिशत तक सफलता पाई गयी है, किन्तु कटिंग द्वारा पौध उत्पादन कार्य में अपेक्षित सफलता प्राप्त नही हो सकी है।

धनात्मक वृक्ष का चयन

सर्वप्रथम मध्य आयु के स्वस्थ व रोग मुक्त वृक्ष का चयन किया जाता है जिससे उच्च गुणवत्ता की रोपण सामग्री प्राप्त की जा सके।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

काफल का बीज सुर्ख काला होने पर पूर्ण रूप से परिपक्व होता है अतः बीज एकत्र करते समय यह ध्यान रखना चाहिए क्योंकि अपरिपक्व बीज का अंकुरण काफी कम होता है। बीज को मई के द्वितीय पक्ष में एकत्र करना चाहिए। एकत्रीकरण के उपरान्त बीज/फल का छिलका नहीं हटाना चाहिए तथा एक सप्ताह तक खुली धूप में सुखाना चाहिए। तत्पश्चात सूखे हुये बीज को

गुनगुने पानी (40 डिग्री सेंटीग्रेट) में डालकर ऊपर से ढक देते हैं। 24 घंटे के उपरान्त बीज को पानी से निकालकर अंकुरण क्यारियों में बोते हैं। बीज को बाहरी पल्प सहित ही बोते हैं क्योंकि मायरिक एसिड बीज के कठोर आवरण को तोड़ने में सहायक होता है। बीज को बालू में बोने के उपरान्त ह्यूमस से ढकने पर बेहतर अंकुरण पाया गया है। बुआई का कार्य मई के अंतिम सप्ताह या जून के प्रथम सप्ताह तक पूर्ण कर लेना चाहिए।

पौध प्रत्यारोपण

बीज बोने के 30 दिनों के उपरान्त अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है तथा लगभग 45 दिनों में अर्थात 15 जुलाई तक अंकुरण पूर्ण हो जाता है। जुलाई के अंतिम सप्ताह या अगस्त के प्रथम सप्ताह में अंकुरित पौध प्रत्यारोपण हेतु तैयार हो जाती है जब उनमें कम से कम चार पत्तियॉ आ जाती हैं। प्रत्यारोपित करते समय पौधों को अंकुरण क्यारियों से सावधानीपूर्वक निकालना चाहिए क्योंकि जड़ों के क्षतिग्रस्त होने से प्रत्यारोपण उपरान्त पौध प्रतिशत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पौधे को पत्तियों से पकड़कर रूट ट्रेनर/पालीथीन बैग में प्रत्यारोपण कर शेड नेट में रखना चाहिए तथा दिन में 2 बार सिंचाई करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्यारोपित काफल पौध में 80 से 90 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त होती है। एक माह के उपरान्त पौधो को खुले स्थान में रखा जा सकता है। प्रत्यारोपित पौध का रोपण 2 वर्ष के उपरान्त वृक्षारोपण क्षेत्रों में किया जाना उपयुक्त होता है।

एयर लेयरिंग (गूटी) द्वारा पौध तैयार करना

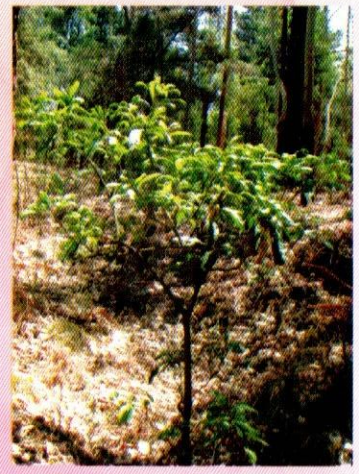

शीघ्र फल प्राप्त करने की दृष्टि से गूटी द्वारा पौध तैयार करना उपयोगी होता है एवं लगभग 15 वर्ष पुराने वृक्ष में गूटी बॉधनी चाहिए। काफल वृक्ष के दो वर्ष पुरानी टहनी जिसका रंग हल्का भूरा हो, की छाल को चाकू से एक इन्च गोलाई में तने से हटा दिया जाता है, उसके उपरान्त कटे हुए भाग पर आई0बी0ए0 5000 पी0पी0एम0 पाउडर लगाकर मौस से ढकने के उपरान्त काली पॉलीथीन से दोनों तरफ बॉध दिया जाता है। यह कार्य वर्षाकाल अर्थात माह जुलाई–अगस्त में किया जाना चाहिए। लगभग 3 माह के उपरान्त जड़ें विकसित